KHAN GLOBAL STUDIES
Kisan Cold Storage, Sai Mandir, Musallahpur Hatt, Patna - 6
Mob. : 8877918018, 8757354880, Web:- khanglobalstudies.com
Time : 07 to 08 am
HISTORY
By : Khan Sir
(मानचित्र विशेषज्ञ)

दिल्ली दरबार

- दिल्ली दरबार भारत में राजसी दरबार होता था। यह इग्लैण्ड के महाराजा या महारानी के राजतिलक की शोभा में सजते थे। इसका आयोजन दिल्ली के कोरोनेशन पार्क में किया जाता था। सन् 1877 से 1911 के बीच तीन दरबार लगे थे। सन् 1911 का दरबार एक मात्र ऐसा था जिसमें सम्राट स्वयं जार्ज पंचम आये थे।

1877 - दिल्ली दरबार

- 1876 – शाही पद अधिनियम आया जिसमें महारानी विक्टोरिया को भारत की साम्राक्षी घोषित किया गया और 1 Jan 1877 को दिल्ली दरबार का आयोजन किया गया। इसे लार्ड लिटन ने आयोजित किया।
- सार्वजनिक तौर पर 1877 महारानी विक्टोरिया को भारत की साम्राज्ञी घोषित किया गया। और साथ ही महरानी को **'कैसर-ए-हिन्द'** की उपाधि दिया गया।
- 1876-78 में दक्षिण भारत में अकाल था, और इस दरबार में वेशुमार धन खर्च किया गया। इस कारण इसका विरोध होने लगा। इसमें कोई भी भारतीय जनता के हित में निर्णय नहीं लिया गया।
- महारानी विक्टोरिया का संदेश के अंश-कलकत्ता के विक्टोरिया मेमोरियल में दर्ज है। इसमें महारानी ने कही कि यह अवसर हमारे प्रजा और हमारे बीच में मधुर संबंध स्थापित करेगा।

1903 - दिल्ली दरबार

- इसे लार्ड कर्जन ने आयोजित किया।
- सम्राट एडवर्ड सप्तम् और महारानी एलेक्जेंडा को भारत का सम्राट और साम्राज्ञी घोषित किया गया। सम्राट स्वयं इस दरबार में न आकर अपने भाई **ड्यूक ऑफ कनॉट** को भेजा।
- यह सर्वाधिक **शानो शौकत** वाला दरबार था। इस दरबार को एक सप्ताह तक आयोजन किया गया।
- इसमें अस्थाई नगर बसाया गया, अस्थाई रेल, डाक, तार, पानी, बिजली, अस्तबल आदि।
- इसमें स्वयं लार्ड कर्जन और लेडी कर्जन ने नृत्य भी किया। सबसे खर्चीला दरबार यही था। यह दरबार केवल शक्ति प्रदर्शन का था। इस दरबार में भी भारतीय जनता के हित में कोई निर्णय नहीं लिया गया।

1911 - दिल्ली दरबार

- इसे लार्ड हार्डिंग-II ने आयोजित किया।
- जार्ज पंचम और महारानी विलियम मेरी को भारत का सम्राट और साम्राक्षी घोषित किया गया। इसमें सम्राट स्वयं उपस्थित थे।
- सम्राट को 8 मेहराब वाला एक मुकुट पहनाया गया जिसमें सैकड़ों हीरे जवारात जड़ित था।
- पटियाला की रानी की तरफ से विलियम मेरी को हार उपहार स्वरूप दिया गया।
- दिल्ली में वर्तमान में कोरोनेशन पार्क नामक जगह में दिल्ली दरबार लगाते थे।
- इस दरबार में बहुत ही महत्वपूर्ण निर्णय सम्राट के द्वारा लिया गया।

निर्णय - 1 :- बंगाल का विभाजन रद्द

- 16 Oct. 1905 (लार्ड कर्जन) में बंगाल का विभाजन किया गया था।
- 1911 में विभाजन रद्द कर दिया गया।
- बंगाल का पुर्नगठन किया गया
  - बंगाल
  - उड़ीसा, बिहार
  - असम को कमिशनरी क्षेत्र

निर्णय - 2 :- राजधानी को 1911 में दिल्ली रक्षानान्तरित करने का निर्णय।

- कलकत्ता से दिल्ली राजधानी

By : Khan Sir (मानचित्र विशेषज्ञ)

निर्णय - जार्जपंचम = 1911
15 दिसम्बर 1911 को नई दिल्ली की नीव जार्जपंचम के द्वारा रखी गयी
1912 में राजधानी दिल्ली स्थानन्तरित

दिल्ली को राजधानी बनाने का कारण

- प्रथम विश्व युद्ध का माहौल
- सुरक्षा के दृष्टिकोण से – दिल्ली राजधानी सुरक्षित थी।
- दिल्ली की अवस्थिति मध्य में थी। दिल्ली से पूरे भारत पर नियंत्रण करना आसान था।
- राजनीतिक इतिहास
- बंगाल अब राष्ट्रवाद का गढ़ बन चुका था।

नई दिल्ली

- दिल्ली के दक्षिण में 1911 में नई दिल्ली की नीव पड़ी। नई दिल्ली की रूपरेख तैयार करने का कार्य ब्रिटेन के वास्तु विद एडबिन लुटियन ने हरवर्ट बेकर के साथ मिलकर किया। और 1927 में नई दिल्ली नाम दिया गया। 1931 में नई दिल्ली का उद्घाटन वायसराय लॉर्ड इरविन के द्वारा किया गया।

'जन गण मन' विवाद

- सर्वप्रथम 1911 में कांग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन में जन-गण-मन गाया गया।
- इसी अधिवेशन में जार्ज पंचम के स्वागत का प्रस्ताव भी पारित हुआ था। और एक गीत बच्चों के द्वारा जार्ज पंचम के सम्मान में एक गीत 'बादशाह हमारा' गया गया। इस गीत के रचयिता कवि रामभूज चौधरी थे।
- बंगाल के अंग्रेजी अखबार में यह छपा था। कि कलकत्ता अधिवेशन में जार्जपंचम का स्वागत प्रस्ताव पारित हुआ और जन-गण-मन गाया गया। इस कारण विवाद हो गया।

★★★

नेहरू काल

- भारत **15 अगस्त, 1947** को आजाद हुआ और पाकिस्तान का 14 अगस्त, 1947 को जन्म हुआ।
- जब भारत और पाकिस्तान का विभाजन हुआ तो इस विभाजन में अंग्रेजों ने एक बड़ी गलती कर दी। उन्होंने कहा कि जिन्हें पाकिस्तान में रहना है वो पाकिस्तान चले जाए और जिन्हें भारत में रहना है वो भारत में रह जाए।
- इसके अलावा उसने यह भी कहा कि जिसको स्वतंत्र रहना है वह स्वतंत्र रह जाए। इसमें काश्मीर के **राजा हरिसिंह** की दूरदर्शिता नहीं थी।
- हरि सिंह के प्रधानमंत्री **शेख अब्दुल्ला** थे।
- शेख अब्दुल्ला के कहने पर हरिसिंह ने काश्मीर को स्वतंत्र रखने का निर्णय लिया। जैसे ही काश्मीर के राजा हरिसिंह ने काश्मीर को स्वतंत्र रहने का निर्णय लिया तो पाकिस्तान ने काश्मीर पर हमला कर दिया और वहां कबायली के भेष में आतंकवादियों को भेज दिया।
- हरि सिंह नेहरू के पास मदद मांगने के लिए आये।
- सरदार पटेल ने हरिसिंह से **26 अक्टूबर, 1947** को विलय पत्र पर हस्ताक्षर कराया और सेना की जिम्मेदारी **बिग्रेडियर उस्मानी** को देकर काश्मीर भेज दिए।
- यह युद्ध 1948 तक चली थी। जब तक हमारी सेना काश्मीर में पहुँची तबतक पाकिस्तान काश्मीर का 30% हिस्सा POK पर कब्जा कर चुका था और वहीं से भारत-पाक के सीमा का निर्धारण किया गया।
- जवाहर लाल नेहरू ने इस मुद्दे को UNO में ले गए। यह UNO में जाना नेहरू की सबसे बड़ी गलती थी। यह मुद्दा आजतक UNO में अटकी हुई है।
- शेख अब्दुल्ला के कहने पर हरि सिंह ने भारत से काश्मीर के लिए अलग संविधान बनाने की मांग की उसमें बहुत सारी शर्तें रखी–

★ इसमें जम्मू-काश्मीर की सीमाएं भारत की सीमाएं हैं।

★ जम्मू-काश्मीर में भारत की कोई संविधान लागू नहीं होगा।

★ यहाँ राष्ट्रपति का शासन तथा राष्ट्रीय आपात लागू नहीं होगा।

★ दूसरे राज्य के लोग यहाँ आकर हमेशा के लिए बस नहीं सकते और न ही यहां जमीन खरीद सकते।

★ इस संविधान में एक शर्त यह भी था कि पाकिस्तान की कोई लड़की यदि जम्मू-काश्मीर में आकर शादी करती है, तो उसे जम्मू-काश्मीर की नागरीकता दे दी जाएगी लेकिन भारत की लड़की यदि जम्मू-काश्मीर में शादी करती है तो उसे जम्मू-कश्मीर की नागरिकता नहीं दी जाएगी।

By: Khan Sir (मानचित्र विशेषज्ञ)

☞ हरि सिंह की मृत्यु के बाद **जम्मू-काश्मीर की बागडोर शेख अब्दुल्लाह** ने संभाली। शेख अब्दुल्लाह के बाद उसके पुत्र फारूख अब्दुल्लाह ने काश्मीर की बागडोर संभाली।

☞ फारूख अब्दुल्लाह के बाद उसका पुत्र उमर अब्दुल्लाह ने काश्मीर की बागडोर संभाला।

☞ वर्तमान में जम्मू काश्मीर को खास दर्जा देने वाली धारा 370 को खत्म कर दिया गया। इसके साथ ही जम्मू काश्मीर को जम्मू तथा लद्दाख दो केंद्र शासित प्रदेश बना दिया गया।

भारत-चीन समझौता

☞ भारत को अंदेशा इस बात का था कि अगर चीन से युद्ध न हो तो भारत की स्थिति काफी हद तक सही हो जाएगा। भारत चाहता था कि किसी भी तरह चीन से युद्ध टाला जाए।

☞ जवाहरलाल नेहरू उस समय भारत के प्रधानमंत्री थे उन्होंने सोचा कि हम किसी भी प्रकार से चीन के साथ युद्ध को टाल दें।

☞ इन्होंने चीन के साथ एक समझौता किया जिसे पंचशील समझौता कहते हैं। यह **पंचशील समझौता 1954** में हुआ था। यह समझौता 20 साल तक होनी थी, लेकिन चीन ने 6 साल तक का ही समझौता किया।

☞ यह समझौता जवाहरलाल नेहरू तथा चीन के राष्ट्रपति **चाऊ मेन लाई** के साथ हुआ था।

☞ इस पंचशील समझौता में पाँच बात कही गई थी- इस समझौता में यह बात कही गई थी कभी भी भारत चीन के बीच युद्ध न हो सके। उस समय हमारे भारतीय वैज्ञानिक **होमी जहांगीर भाभा** थे। इन्हीं के पास भारत का परमाणु विभाग था। इन्होंने कहा था कि हम 20 साल में परमाणु बम बनाने में सक्षम हो जाएंगे।

☞ **पंचशील समझौता के पाँच शर्त्तें–**

1. एक दुसरे की अखण्डता का ध्यान रखना।
2. एक दुसरे के आंतरिक मामले में हस्तक्षेप नहीं करना।
3. सबसे महत्वपूर्ण बात यह थी की एक दुसरे पर युद्ध नहीं करना।
4. अन्तर्राष्ट्रीय मंच पर एक-दुसरे का सहायता करना।
5. एक दुसरे को समान लाभ पहुँचाना।

☞ इसी समझौता में **हिन्दी-चीनी, भाई-भाई का नारा** दिया गया था। इस समझौता का मुख्य उद्देश्य यही था कि किसी भी तरह युद्ध को रोका जाए और आपसी समन्वय बनाया जाए।

☞ इसी बीच में नेहरू से एक बड़ी गलती हो गई जब चीन तिब्बत पर कब्जा किया तो नेहरू ने उसको आंतरिक मामला कहा लेकिन यही बात जब जम्मू-काश्मीर पर आयी तो चीन ने यह कहकर टाल दिया कि हम इसका आंतरिक रूप से अध्ययन करेंगे। उसके बाद अपना विचार रखेंगे और इसी आड़ में **चीन ने 1959 में तिब्बत पर** कब्जा कर लिया और भारत कुछ भी नहीं कर सका।

☞ **तिब्बत के धर्म गुरु दलाई लामा** भारत में हिमाचल प्रदेश के धर्मशाला में शरण लिये।

☞ 1960 में चीन ने **Five Fingure Rule** लागू कर दिया। Five Fingure Rule के तहत चीन तिब्बत को हथेली मानता है और नेपाल, भूटान, अरूणाचल प्रदेश, सिक्किम और लद्दाख को उसकी ऊंगली मानता है।

☞ बार-बार चीन भारत में घुसपैठ करता था। चीन का पूरा प्लान 1962 का था और इस बारे में नेहरू को थोड़ा-सा भी भनक नहीं लगा।

☞ चीन अपना घुसपैठ जारी रखा। चीन अपने आर्मी को तिब्बत में भेजने लगा और वहाँ से अरुणाचल प्रदेश और जम्मू-काश्मीर में।

☞ जब नेहरू नेपाल गये और काठमांडु एयरपोर्ट पर उतरे तो मिडिया ने उनसे पूछा कि आपकी पंचशील समझौता के बावजूद क्यों चीन ने भारत के क्षेत्र में प्रवेश कर रहा है, तो नेहरू ने कहा कि ऐसी कोई घटना नहीं हुई है। वैसे भी मैंने भारतीय सेना को आदेश दिया है कि कोई भी देश अगर भारत में घुसे तो उसे बाहर कर दिया जाए।

☞ चीन ने कहा कि यह युद्ध की धमकी है और अपनी सेना को भेजकर भारत पर आक्रमण कर दिया। भारतीय सेना बहुत बहादुरी से लड़ी।

☞ चीन ने अरुणाचल प्रदेश तथा काश्मीर के क्षेत्र पर कब्जा कर लिया बाद में अरुणाचल प्रदेश का क्षेत्र चीन ने वापस कर दिया, लेकिन जम्मू-काश्मीर का 10% क्षेत्र चीन ने वापस नहीं किया और चीन उस क्षेत्र को **अक्साई चीन** बताता है।

☞ चीन अरुणाचल प्रदेश पर अपना अधिकार बताता है और उसे दक्षिण तिब्बत कहता है।

☞ ताइवान एक स्वतंत्र देश है किंतु चीन हमेशा इसे अपना राज्य बताता है। One China Policy के तहत जो देश चीन से संबंध रखना चाहते हैं उन्हें One China Policy स्वीकार करना पड़ता है।

☞ 1997 में हांगकांग जो ब्रिटेन के अधीन था चीन ने उसपर अधिकार कर लिया।

☞ 2000 में मकाऊ जो पुर्तगाल के अधीन था चीन ने उस पर अधिकार कर लिया।

☞ 2017 में भूटान के चुम्बी घाटी में स्थित डोकलाम पर चीन अपना अधिकार बताने लगा किंतु भारत के विरोध के कारण चीन को पीछे हटना पड़ा, क्योंकि भूटान की रक्षा की जिम्मेदारी भारत की है।

By : Khan Sir (मानचित्र विशेषज्ञ)

भारत-पाक युद्ध

- 14 अगस्त, 1947 को पाकिस्तान का जन्म हुआ। 1948 में इसने काश्मीर के 30% क्षेत्र पर कब्जा कर लिया, जिसे POK कहते हैं।
- **1956 में पाकिस्तान** ने खुद को इस्लामिक राष्ट्र घोषित कर लिया।
- 1965 का **भारत-पाक युद्ध ताशकंद समझौता** के द्वारा समाप्त हुआ।
- 1971 में भारत-पाकिस्तान के बीच बांग्लादेश को लेकर युद्ध हुआ।
- बांग्लादेश पहले **पूर्वी पाकिस्तान** था किंतु भारत के सहयोग से शेख मुजिबुल रहमान ने मुक्ति वाहिनी के द्वारा बांग्लादेश का निर्माण किया।
- इस युद्ध में पाकिस्तान के 93 हजार सेना आत्मसमर्पण की थी। यह युद्ध शिमला समझौता के बाद समाप्त हुआ।
- 1972 में पाकिस्तान ने बांग्लादेश को स्वतंत्र देश घोषित किया।
- 1984 में पाकिस्तान ने विश्व के सबसे ऊँचा तथा सबसे ठंडा युद्ध का मैदान **सियाचीन** में घुसपैठ कर दिया। जिसके बदले भारतीय सेना ने ऑपरेशन मेघदुत तथा राजीव चलाया।
- 1999 में पाकिस्तानी घुसपैठियों ने कारगिल में घुसपैठ कर दिया। भारतीय सेना ने ऑपरेशन विजय चलाया जबकि भारतीय वायु सेना ने ऑपरेशन सागर चलाया।
- 1984 में स्वर्ण मंदिर में घुसे सिक्ख विद्रोहियों को निकालने के लिए ऑपरेशन ब्लू स्टार चलाया गया।
- 2008 में ताज होटल में घुसे आतंकवादियों को निकालने के लिए ऑपरेशन ब्लैक टोरनाडो चलाया गया।

➢ **कोरिया युद्ध**–कोरियाई प्रायद्वीप को दो भागों में बाँट दिया गया। उत्तरी कोरिया रूस के साथ हो गया और दक्षिणी कोरिया अमेरिका के साथ हो गया। पूरे कोरिया पर किम-जोंग-शुन ने कब्जा कर लिया। किम-जोंग-शुन का पुत्र किम-जोंग-इल ने दक्षिणी कोरिया पर हमला कर दिया। इन दोनों देशों को हथियार की पूर्ति अमेरिका तथा रूस करते थे। इन दोनों के बीच 1950–53 तक तीन सालों तक युद्ध चला। जिसे कोरियाई युद्ध कहा गया। इस युद्ध के फलस्वरूप 38º समानान्तर रेखा खींच दी गई। यही उन दोनों की सीमा रेखा है। वर्तमान में किम-जोंग-उन कोरिया का शासक है।

➢ **वियतनाम युद्ध**– कोरिया संकट के बाद रुस तथा अमेरिका वियतनाम में प्रवेश कर गये और वियतनाम को दो भागों में बाँट दिए। इन दोनों ही भागों में आपसी वर्चस्व बनाने के लिए 1955 में युद्ध प्रारंभ हो गया। यह युद्ध 1975 तक चला। इस युद्ध में अमेरिका ने वियतनाम के ऊपर 27 करोड़ बम गिराया। वियतनाम की जनता हो-चि-मिन्ह के नेतृत्व में एक हो गई और उत्तरी तथा दक्षिणी वियतनाम को अलग करने वाली 17º समानान्तर रेखा समाप्त करके एक हो गए। हो-चि-मिन्ह को Uncle-ho कहते हैं।

➢ **क्यूबा संकट 1961**– क्यूबा अमेरिका का पड़ोसी देश है जहां रूस ने परमाणु मिसाइलें लगा दी थी किन्तु अमेरिका ने वहां के फिडेल कास्त्रो की सरकार पर दबाव बना दिया। जिससे रूस को पीछे हटना पड़ा।

➢ **ईराक-इरान युद्ध–(1980–88)**– ईराक तथा इरान दोनों ही रूस के समर्थक थे किन्तु दोनों में आपसी वर्चस्व को बनाये रखने के लिए एक-दूसरे से युद्ध कर लिये। यह युद्ध 1980 से 1988 तक चला। इस युद्ध में ईराक विजयी रहा और 1988 में युद्ध विराम हो गया।

➢ **कुवैत-इराक युद्ध**– इराक ने तेल चोरी के कारण तथा कुवैत के कर्ज से बचने के लिए कुवैत पर हमला कर दिया। इराक ने 2 अगस्त, 1990 को कुवैत पर आक्रमण किया और 4 अगस्त, 1990 तक कुवैत को जीत लिया।

➢ **खाड़ी युद्ध (1990–91)**– सद्दाम हुसैन ने कुवैत पर अधिकार कर लिया था। अत: कुवैत के बचाव में UNO तथा अमेरिका के नेतृत्व वाली संयुक्त सेना ने Operation Deseart Storm के तहत इराक पर आक्रमण कर दिया और सद्दाम हुसैन की सत्ता का अंत कर दिया। इस युद्ध को खाड़ी युद्ध कहते हैं।

➢ **IC–814 विमान हाइजेक**–लस्कर-ए-तैयबा के आतंकवादियों ने नेपाल के त्रिभुवन एयर पोर्ट से एयर इंडिया का जहाज IC-814 का अपहरण कर लिया। लस्कर-ए-तैयबा के आतंकवादियों ने विमान को छोड़ने के बदले खुंखार आतंकवादी मौलाना मसूद अजहर तथा उसके दो साथियों को छुड़ा ले गये।

➢ लस्कर-ए-तैयबा तथा जैश-ए-मोहम्मद के आतंकवादियों ने 2001 में भारतीय संसद पर हमला किया। इस हमने के मुख्य अभियुक्त अफजल गुरु को 2012 में फाँसी दे दिया गया।

➢ इसी आतंकवादी संगठन ने 26 नवम्बर, 2008 को ताज होटल, नरीमन हाउस तथा CST स्टेशन पर हमला किया। जिसे NSG के कमांडो ने ऑपरेशन ब्लैक टोरनेडो द्वारा समाप्त कर दिया।

❑❑❑

By : Khan Sir (मानचित्र विशेषज्ञ)

विश्व का इतिहास
World History

पुर्नजागरण

- पुनर्जागरण का अर्थ होता है- ''किसी पुरानी व्यवस्था को छोड़कर नई रिति रिवाज अपना लेना।''
- पुनर्जागरण शब्द फ्रांसिस भाषा के रेनेसा शब्द से बना है, जिसका अर्थ होता है- दुबारा जाग उठना।
- पुनर्जागरण की शुरुआत इटली के शहर फ्लोरेंस से हुआ।
- इसकी शुरुआत प्रसिद्ध कवि दांते ने किया। उनकी पुस्तक डिवाइन कामेडी में स्वर्ग एवं नरक के काल्पनिक का वर्णन किया गया है।
- पुनर्जागरण इटली से ही प्रारम्भ हुआ क्योंकि इटली मध्य में पड़ता था जिस कारण उसे अत्यधिक व्यापारिक लाभ हुआ। अत: वहां के लोग धनी हो गए और उनका विज्ञान तथा कला के क्षेत्र में अत्यधिक विकास हुआ।

➲ कुस्तुन्तुनिया पर तुर्की का अधिकार–

- कुस्तुन्तुनिया वेजेण्टाइन साम्राज्य की राजधानी थी जो इसाईयों का एक प्रमुख केन्द्र था।
- कुस्तुन्तुनिया पर मुस्लिम राष्ट्र तुर्की ने अधिकार कर लिया। अत: कुस्तुन्तुनिया के विद्वान लोग अपनी कला, संस्कृति, विज्ञान इत्यादि को बचाने के लिए इटली में ही शरण ले लिये, जिससे इटली के लोगों का नये विचारों से परिचय हुआ।

➲ यूरोप में पुर्नजागरण का कारण:–

1. मुस्लिम तथा इसाइयों के बीच धर्मयुद्ध हो गया जिसमें इसाई पराजित हो गये। अत: वे शरण लेने के लिए नई-नई जगहों की खोज करने लगे। जिनसे उनके विचारों में सुधार आया और उन्हें नए विचार मिलें।
2. कुस्तुन्तुनिया पर तुर्की का अधिकार होने के कारण यूरोपीय लोग शरण लेने के लिए नये-नये जगहों की खोज करने लगे।
3. यूरोप में कई वैज्ञानिक उपकरण तैयार किये गये। जैसे- दिशा-सूचक यंत्र, कम्पास।
4. यूरोप में छपायीखाना (Printing Press) की खोज हो गयी, जिससे विचारों को फैलाने में आसानी हुयी।

➲ पुनर्जागरण की विशेषता:–

1. लोग धार्मिक विषयों के स्थान पर विज्ञान, दर्शन, भूगोल जैसे-विषयों को पढ़ने पर ध्यान दिए।
2. लोग परलोकवाद तथा मोक्ष प्राप्ति के स्थान पर सामाजिक मुद्दे पर अधिक ध्यान देने लगे।
3. अंधविश्वास तथा रुढ़ीवाद से लोगों का विश्वास उठ गया।
4. पुनर्जागरण के बाद लोग किसी के विचारों पर तर्क-वितर्क करते थे।

➲ साहित्य के क्षेत्र में पुनर्जागरण:–

- दांते ने 'डिवाइन कामेडी' नामक पुस्तक लिखी।
- पेट्रार्क ने 'कैवेलियर टेलर्स' नामक पुस्तक लिखी।
- मैक्यावेली ने 'द प्रिंस' तथा 'आर्ट आफ वार' नामक पुस्तक लिखा।
- सेक्सपियर ने 'मर्चेन्ट ऑफ वेनिस' जैसी पुस्तक लिखा।
- बुकेशिये ने 'डेकामेरान' की कहानी लिखा।

➲ स्थापत्यकला के क्षेत्र में पुनर्जागरण:–

- सेन्ट पिटर गिरजाघर (रोम), सेट पॉल गिरजाघर (लंदन), सेन्ट मार्क गिरजाघर (वेनिस) जैसे गिरजाघरों का निर्माण पुनर्जागरण के समय हुआ।

➲ चित्रकला के क्षेत्र में पुनर्जागरण:–

- राफेल ने 'मेडोना' नामक चित्रकारी बनायी तथा लिनियार्डो-डी-विंची ने 'मोनालिसा' तथा 'द लास्ट सपर' नामक चित्रकारी बनायी।

➲ विज्ञान के क्षेत्र में पुनर्जागरण:–

- टाल्मी के विचार के अनुसार सूर्य पृथ्वी का चक्कर लगाता है किन्तु पुनर्जारण के बाद इसके विचारों को काट दिया गया।

(1) **कॉपरनिकस (Poland)** – इन्होंने बताया कि सूर्य स्थिर है। पृथ्वी सूर्य की चक्कर लगाती है।

(2) **कैप्लर (जर्मनी)** – इन्होंने ग्रहों के गति सम्बन्धी नियम दिया।

(3) **न्यूटन (जर्मनी)** – इन्होंने गुरुत्वाकर्षण का नियम दिया।

(4) **गैलिलियो (इटली)** – इन्होंने दूरबिन बनाया।

(5) **मार्कोपोलो (इटली)** – इन्होंने कुतुबनुमा (दिशा सूचक यंत्र, कम्पास) बनाया।

(6) **रोजर मेकर (इंग्लैण्ड)** – इन्होंने सूक्ष्मदर्शी बनाया।

By: Khan Sir (मानचित्र विशेषज्ञ)

➲ पुनर्जागरण का प्रभावः–

- पुनर्जागरण के बाद मान्यता में कमी आयी।
- लोग नये जगहों की खोज करने लगे। जिस कारण नये-नये उपनिवेश बनने लगे।
- इस्लाम धर्म पिछड़ने लगा और इसाई धर्म आगे बढ़ने लगा।

धर्म सुधार आंदोलन

- पुनर्जागरण के बाद धर्म सुधार आन्दोलन प्रारम्भ हो गया।
- धर्म सुधार आन्दोलन का कोई तात्कालिक कारण नहीं था।
- धर्म सुधार आन्दोलन इसाई धर्म में मौजूद बुराईयों के विरुद्ध एक आन्दोलन था।
- इसाई धर्म में कैथोलिक पोप के विरुद्ध सर्वप्रथम जर्मनी के निवासी मार्टिन लूथर किंग ने आवाज उठाया और 1530 ई. में प्रोटेस्टेन्ट नामक एक इसाई धर्म की एक नयी शाखा बना दी।
- मार्टिन लूथर किंग के कारण ही धर्म सुधार आन्दोलन सफल रहा।

➲ धर्म सुधार आंदोलन के प्रभावः–

(1) चर्च के प्रभाव में कमी आयी।

(2) कैथोलिक धर्म को मानने वालों में कमी आयी।

(3) पोप की शक्ति में कमी आयी।

(4) राजा की शक्ति में वृद्धि हुई।

(5) चर्च की बुराई में कमी आयी।

(6) प्रोस्टेन्ट धर्म का उदय हुआ।

औद्योगिक क्रान्ति

- औद्योगिक क्रान्ति की शुरुआत 18वीं सदी में इंग्लैण्ड में हुयी।
- औद्योगिक क्रांति में उत्पादन के संसाधन में अत्यधिक वृद्धि हुयी। जिससे नए-नए उद्योग धंधे लगने लगे।

➲ इंग्लैण्ड में औद्योगिक क्रान्ति के कारणः–

(1) इंग्लैण्ड के उपनिवेश अधिक थे। जहां से इंग्लैण्ड को लोहा, कोयला इत्यादि आसानी से मिल जाता था।

(2) इंग्लैण्ड अपने उपनिवेश से ही कच्चा माल प्राप्त कर लेता था।

(3) इंग्लैण्ड के वैज्ञानिकों ने कई आविष्कार किये जिससे की उद्योग बढ़ा। जैसे-फ्लाईंग शटल, स्पीन, जैनी नामक यंत्र ने सूत काटना (धागा बनाने) का कार्य आसान कर दिया।

(4) इंग्लैण्ड किसी भी युद्ध में उतना ही पड़ता था जिससे कि उसका व्यापारिक हित मिल सके।

(5) इंग्लैण्ड के पूंजीपतियों के पास धन की कमी नहीं थी, जिस कारण उद्योग बढ़ते गये।

(6) इंग्लैण्ड को बाजार के रूप में एवं इसके अपने ही उपनिवेश थे।

- उपरोक्त कारणों से ही इंग्लैण्ड में औद्योगिक क्रांति हुयी। उस समय इंग्लैण्ड को विश्व का उद्योग शाखा कहा जाता था।

➲ औद्योगिक क्रान्ति के प्रभावः–

(1) कच्चा माल, सस्ता श्रम तथा बाजार के लिए यूरोपीय देशों में नए-नए उपनिवेश बनाने की होड़ लग गयी।

(2) कृषि प्रणाली में अत्यधिक परिवर्तन हुआ।

(3) अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में वृद्धि हुयी।

(4) नए-नए यंत्र बनाने की होड़ शुरू हो गयी।

➲ औद्योगिक क्रान्ति के दौरान बने यंत्रः–

- सुत काटने के लिए फ्लाइंग सटल, स्पीन जैनी, बाहर क्रेन तथा म्यूल जैसे यन्त्र की खोज हुयी।
- इसी क्रान्ति के दौरान स्टीमर, रेल इंजन तथ सिलाई मशीन की खोज हुयी।

➲ औद्योगिक क्रान्ति के लाभः–

(1) लोगों की जीवनशैली तथा उत्पादन में वृद्धि हुयी।

(2) अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में वृद्धि हुयी।

➲ औद्योगिक क्रान्ति के हानिः–

(1) समाज का नैतिक पतन हुआ।

(2) छोटे किसानों का अन्त हो गया।

(3) गृह व्यवसायी (कुटीर उद्योग) का अन्त हो गया।

(4) समाज दो वर्गों में बंट गया-(i) पूंजीपति तथा (ii) श्रमिक

➲ औद्योगिक क्रान्ति का प्रसारः–

- औद्योगिक क्रांति का विस्तार जर्मनी, फ्रांस, इटली, U.S.A. होते हुए पूरे विश्व में फैल गया।
- औद्योगिक क्रान्ति से सर्वाधिक लाभ कपड़ा उद्योग को हुआ।
- औद्योगिक क्रान्ति में इंग्लैण्ड का प्रतिद्वंद्वी जर्मनी था। जिस कारण इंग्लैण्ड तथा जर्मनी में हमेशा विवाद होता रहता था और यही विवाद प्रथम विश्व युद्ध का रूप ले लिया।

By : Khan Sir (मानचित्र विशेषज्ञ)

इंग्लैण्ड की क्रांति (1688)

- इंग्लैण्ड की क्रांति की शुरूआत 1688 ई. में हुआ। इंग्लैण्ड की क्रान्ति को शांतीपूर्ण क्रांति, गौरवपूर्ण क्रांति, रक्तहीन क्रांति तथा glorious क्रांति के नाम से जानते हैं, क्योंकि इंग्लैण्ड की क्रांति में रक्त का एक बूंद भी नहीं बहा था।
- 11वीं सदी में राजा हेनरी-I ने सलाहकारों का एक परिषद (मंत्री परिषद्) का गठन किया। जिसे क्यूरिया रेजिस कहा गया।
- 1215 ई. में राजा जॉन के नितियों से असन्तुष्ट होकर सामन्तों ने (वैरम) एक घोषणा पत्र (मैग्नाकार्टा) तैयार किया और उसे राजा जॉन से जबरदस्ती स्वीकार करा लिया। इस घोषणा पत्र के अनुसार राजा को सलाहकार परिषद के अनुसार ही कार्य करना था।
- 1485 से लेकर 1603 तक ट्यूडर वंश का शासन रहा। इस वंश का शासक अत्यन्त निरंकुश थे। इस वंश के शासकों ने जनता का दमन किया। जिस कारण जनता मैग्नाकार्टा को भूल गयी।
- 1603 से 1714 ई. तक स्टुअर्ट वंश का शासन रहा। इस वंश के पहले शासक जेम्स-I (1603–1625) के समय राजा एवं संसद के बीच विवाद होने लगा क्योंकि इस अवधी में पुनर्जागरण हो चुका था।
- जनता तथा राजा के बीच विद्रोह बढ़ता गया। जनता राजा के निरंकुशता को स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं थी।
- जेम्स-I के बाद उसका पुत्र चार्ल्स-I राजा बना (1625–1649)
- चार्ल्स-I के समय जनता खुल के विद्रोह करने लगी क्योंकि चार्ल्स-I नया-नया कर लगाता था।
- जनता तथा राजा के बीच का विद्रोह गृह युद्ध का रूप लेने लगा।
- इंग्लैण्ड के इस गृह युद्ध में दो गुट बन गये –
  - (i) पादरी जमींदार तथा राजा एक गुट में थे जिन्हें कैवेलियर कहा जाता था।
  - (ii) जनता, व्यापारी तथा संसद एक गुट में थे जिन्हें Round Head कहा जाता था।
- जनता का नेतृत्व क्रॉमवेल कर रहा था और इस गृह युद्ध में जनता ने चार्ल्स-I को पकड़कर 30 जनवरी, 1649 को फांसी दे दिया।
- चार्ल्स-I के बाद इंग्लैण्ड का राजा क्रॉमवेल को बनाया गया। प्रारम्भ में क्रामवेल संसद के अनुसार कार्य कर रहा था किन्तु धीरे-धीरे क्रॉमवेल भी निरंकुश होने लगा। फलस्वरूप जनता शीघ्र ही क्रॉमवेल के शासन से उब गयी।
- क्रॉमवेल प्युरितल धर्म को मानता था और वह जनता पर जबरदस्ती इस धर्म को थोपने लगा। अत: जनता क्रॉमवेल को हटाकर चार्ल्स-II को राजा बना दिया।
- चार्ल्स-II प्रारम्भ में अच्छे से शासन करता था किन्तु वह भी धीरे-धीरे निरंकुश होने लगा।
- चार्ल्स-II के मृत्यु के बाद जेम्स-II राजा बना। जेम्स-II के शासक बनते ही वह निरंकुश हो गया और वह अपने विद्रोहीयों का दमन करने लगा।
- इंग्लैण्ड की संसद ने हॉलैण्ड के राजकुमार विलियम ऑफ आरेन्ज तथा जेम्स की पुत्री मेरी को संयुक्त रूप से England का शासक नियुक्त कर दिया।
- हॉलैण्ड का राजकुमार William of Orange अपने 15,000 सैनिकों के साथ इंग्लैंड में प्रवेश करने पर इंग्लैंड की जनता ने उनका स्वागत किया।
- जेम्स-II William of Orange के डर से England छोड़कर भाग गया। इस प्रकार 1688 ई. में बिना रक्त बहाए ही England की क्रांति सफल हो गयी।

इंग्लैण्ड की क्रान्ति का प्रभाव:–

(1) राजा तथा संसद के बीच के विवाद को समाप्त किया गया।

(2) राजा को औपचारिक प्रधान बनाया गया।

(3) राजा तथा संसद की अधिकारों को निर्धारित किया गया।

अधिकार घोषणा पत्र (1689):–

- इस घोषणा पत्र के अनुसार राजा संसद के बिना अनुमति ना कोई कानून बना सकता है ना ही पुराने कानून को समाप्त कर सकता है। राजा बिना संसद के अनुमति कोई नया कर नहीं लगा सकता।
- वित्त तथा सेना संसद के नियन्त्रण में होगी।

Note: England की क्रांति विश्व की पहली राजनीतिक क्रांति थी।

Note: England की क्रांति का मुख्य कारण राजा तथा संसद के बीच सत्ता प्राप्त करने का संघर्ष था।

अमेरिका की क्रांति

- अमेरिका की क्रान्ति का मुख्य कारण इंग्लैण्ड द्वारा उसका शोषण करना था।
- इंग्लैण्ड ने अमेरिका को अपना उपनिवेश बनाया था।
- इंग्लैण्ड ऐसा ही कानून बनाता था जिससे उसे लाभ हो तथा अमेरिका को हानि हो।
- इसी समय दो घटनाएं हुई- (i) स्टाम्प एक्ट तथा (ii) बोस्टन चाय पार्टी

स्टाम्प एक्ट (1765):–

- इसे U.S.A. ने अस्वीकार कर दिया क्योंकि Parliament (संसद) में U.S.A. का कोई प्रतिनिधि नहीं थे। अत: उन्होंने कहा कि "प्रतिनिधि नहीं तो कर नहीं" To tax without Tax Repersentitive

By: Khan Sir (मानचित्र विशेषज्ञ)

➲ बोस्टन चाय पार्टी (16 दिसम्बर, 1773):–

- इंग्लैण्ड ने अमेरिका भेजे जाने वाले चाय पर अत्यधिक कर लगाया था। जब चाय से भरा जहाज U.S.A. के बोस्टन बन्दरगाह पर पहुँचा तो अमेरिका के लोगों ने सैमुअल एडम्स के नेतृत्व में विद्रोह कर दिया और चाय से भरे बोरियों को समुद्र में फेंक दिया, जिस कारण इंग्लैण्ड की सेना ने उन पर गोली चला दिया। इस हत्या को बोस्टन चाय पार्टी की घटना कहते हैं।
- अमेरिकी स्वतंत्रता का संदेश तथा राष्ट्र प्रेम की भावना को जैफरसन, जॉन लॉक, जॉन मिल्टन, थामस येन जैसे प्रमुख कवियों ने फैला दिये।
- 04 जुलाई 1776 को अमेरिका ने खुद को स्वतन्त्र घोषित कर लिया और आन्दोलन प्रारंभ कर दिया।
- अमेरिकी सेना का नेतृत्व जार्ज वाशिंगटन कर रहा था। यह युद्ध 1783 तक चला।
- इस युद्ध की समाप्ति 1783 के पेरिस समझौते के तहत समाप्त हुआ।
- इस समझौते के तहत इंग्लैण्ड ने अमेरिका को स्वतंत्र घोषित कर दिया।

Remark: अमेरिका ने स्वयं को 04 जुलाई, 1776 को स्वतंत्र घोषित किया था किन्तु इंग्लैण्ड ने उसे 1783 में स्वतन्त्रता दिया।

- अमेरिका का स्वतन्त्रता दिवस 04 जुलाई, को मनाया जाता है।
- अमेरिका का संविधान 1789 को बनकर तैयार हुआ।
- अमेरिका के क्रोति से प्रभावित होकर 1789 में फ्रांस की क्रांति की शुरुआत हो गयी।
- अमेरिका का प्रथम राष्ट्रपति जार्ज वाशिंगटन को बनाया गया। स्वतन्त्रता के बाद अमेरिका में दो प्रमुख समस्या थी-(i) रंगभेद एवं (ii) दास प्रथा।
- अमेरिका में काले तथा गोरे लोगों के बीच रंगभेद की लड़ाई थी। इस रंगभेद को समाप्त करने में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका मार्टिन लूथर किंग जूनीयर ने निभाया।
- इन्हें ब्लैक गांधी तथा काला गांधी कहा जाता है।
- अमेरिका में दासों की खरीद बिक्री होती थी।
- अब्राहम लिंकन ने दास प्रथा का उन्मूलन कर दिया और उन्होंने लोकतंत्र का सिद्धान्त दिया और कहा कि–"जनता की सरकार जनता के द्वारा तथा जनता के लिए होती है। यही लोकतंत्र है। Government of the people by the people for the people"

फ्रांस की क्रांति

- फ्रांस की क्रान्ति की प्रेरणा U.S.A. की क्रांति से मिली।
- फ्रांस का राजा निरंकुश था और वह फिजूल खर्च अत्यधिक करता था।
- राजा जनता पर नये-नये कर लगाने लगा, जिससे जनता विद्रोह कर दी।
- फ्रांस का राजा इतना निरंकुश था कि एक बार जब राजा लूई-16वीं तथा उनकी पत्नी अन्त्वानेत जब रथ यात्रा पर निकले तो भूखी जनता रोटी-रोटी कहकर भीख मांग रही थी तो रानी ने कहा कि रोटी के स्थान पर ब्रेड खा लो।
- राजा के इस व्यवहार से जनता विद्रोह करने लगी। राजा ने विद्रोहियों को पकड़कर वास्टिल नामक जेल में डाल दिया।
- फ्रांस की जनता का विद्रोह उग्र होता गया और यह विद्रोह रक्तपात का रूप ले लिया। इस रक्तपात की शुरुआत 14 जुलाई 1789 को वास्टिल दुर्ग (जेल) के पतन से प्रारम्भ हुयी और 18 जून, 1815 के वाटर लू के युद्ध में जाकर समाप्त हुयी।

Note: वाटर लू का मैदान बेल्जियम में है इसी कारण वेल्जियम को यूरोप का अखाड़ा कहते हैं।

➲ फ्रांस की क्रान्ति के कारणः–

(1) राजा का निरंकुश होना।

(2) असमान तथा अनिश्चित कानून।

(3) पादरी तथा सामन्त को कर से मुक्त रखना।

(4) राजमहल में धन को पानी की तरह बहाना।

(5) इंग्लैण्ड के साथ लगातार युद्ध होना।

(6) संसद में जनता का बात न सुना जाना।

- फ्रांस की समाज तीन भागों में बटा था-(i) पादरी वर्ग, (ii) कुलीन वर्ग एवं (iii) जनसाधारण वर्ग
- फ्रांस की संसद को स्टेट जनरल कहा जाता था- State General में तीन सदन थे–

(1) एक सदन पादरी का जिसमें कुल 308 सदस्य थे।

(2) दूसरा सदन कुलिन वर्ग का था जिसमें 285 सदस्य थे।

(3) तीसरा सदन समान्य जनता का था जिसमें 621 सदस्य थे।

- जनता का सदन स्टेट जनरल में बायीं तरफ था और वे लोग सरकार का विरोध करते रहते थे। अत: तब से यह परम्परा प्रारम्भ हो गयी कि जो दल सरकार का विरोध करती है उसे Left या वामदल कहते हैं।

By : Khan Sir (मानचित्र विशेषज्ञ)

- 1789 में राजा ने एक नया कर लाया जो सिर्फ साधारण जनता पर लगाने का प्रस्ताव था। अत: तृतीय सदन (जनसाधारण) ने इस कर का विरोध किया। जिस कारण राजा लुई-16 ने तृतीय सदन को भंग कर दिया।

टेनिस कोर्ट Oath (शपथ) :–

- जैसे ही राजा ने तृतीय सदन को भंग किया तो तृतीय सदन के लोगों ने टेनिस कोर्ट के मैदान में आकर शपथ लिया कि वे राजा लुई-16 के शासन का अंत कर देंगे।

वास्टिल दुर्ग का पतन:–

- राजा अपने विद्रोहियों को वास्टिल दुर्ग नामक जेल में डाल दिया। जनता ने वास्टिल दुर्ग को 14 जुलाई, 1789 को नष्ट कर दिया और कैदियों को स्वतन्त्र कर दिया।

Note: 14 जुलाई को फ्रांस का राष्ट्रीय पर्व मनाया जाता है।

चुड़ैलों का धावा:–

- 05 अक्टूबर, 1789 को पेरिस की 10000 महिलाएं ने पेरिस के वर्साय के महल की ओर कूच की। इसी घटना को चुड़ैलों का धावा कहते हैं।
- फ्रांस की क्रांति में पूरे क्रांतिकारी दो भागों में बंटे थे–

  (i) **जैकोबियन** - यह बहुसंख्यक थे तथा हिंसक थे।

  (ii) **जिरोदिस्त** - यह अल्पसंख्यक थे तथा अहिंसक थे।
- फ्रांस की क्रांति का नारा था– समानता, स्वतन्त्रता तथा बन्धुता।
- फ्रांस की क्रांति को रुसो मोण्टेस्क्यू तथा वाल्टेयर नामक दार्शनिकों ने बढ़ावा दिया।

इटली का एकीकरण:–

- इटली का एकीकरण में सबसे बड़ी बाधा आस्ट्रिया थी। वह इटली का एकीकरण नहीं होने देना चाहता था।
- इटली 13 खण्डों में बंटा था।
- इटली के एकीकरण में सबसे पहले सर्डीनिया राज्य आगे आया।
- इटली के एकीकरण का जनक जोसेफ मेजनी को माना जाता है।
- जोसेफ मेजनी ने कहा था कि समाज में क्रान्ति लानी है तो शासन युवाओं को सौंप दी।
- काउण्ट डी. कैवोर ने 1854 ई. में क्रिमिया युद्ध में भाग ले लिया और इटली की समस्या का अंतर्राष्ट्रीकरण कर दिया। इन्हीं के प्रयासों से 1871 ई. में इटली का एकीकरण पूरा हुआ। काउण्ट डी. कैवोर को इटली का बिस्मार्क कहा जाता है।
- गैरी बाल्डी को इटली के एकीकरण का तलवार कहा जाता है। इसे एक विशेष प्रकार की सेना का गठन किया था, जिसे लाल कुर्ति सेना कहा गया।

Note: Florence नाइटिंगल का सम्बन्ध क्रिमिया युद्ध से है। फ्लोरेंस नाईटिंगल को Lady with the lamp कहा जाता था।

जर्मनी का एकीकरण:–

- जर्मनी का एकीकरण का संदेशवाहक नेपोलियन को माना जाता है। इसी ने जर्मनी में राष्ट्रीयता की नींव रखी। जबकि फ्रांस जर्मनी के राइन लैण्ड पर अधिकार किये हुए था। अत: फ्रांस जर्मनी का एकीकरण नहीं होने देना चाहता था।
- जर्मनी का एकीकरण बिस्मार्क ने किया जो प्रशा के शासक विलियम का प्रधानमंत्री था।

Note: प्रशा ने विश्व में सबसे पहले शिक्षा को अनिवार्य बना दिया।

- 1848 ई. में जर्मनी में संविधान का निर्माण के लिए संविधान सभा का गठन हुआ।
- जर्मनी के संविधान को विमर संविधान कहते हैं।
- जर्मनी के शासक को चांसलर कहा जाता है।
- जर्मनी के एकीकरण के दौरान आस्ट्रिया तथा प्रशा के बीच 1886 में युद्ध हुआ इस युद्ध में आस्ट्रिया पराजित हो गया और आस्ट्रिया को जर्मनी का अंग बना लिया गया।
- प्रशा तथा फ्रांस के बीच एकीकरण के लिए 1870 ई. में युद्ध हुआ। इस युद्ध में फ्रांस की पराजय हुयी। इस युद्ध के बाद 1871 ई. में फ्रैंकफर्ट की संधी द्वारा जर्मनी का एकीकरण सम्पन्न हो गया।
- बिस्मार्क ने जर्मनी का एकीकरण करने के बाद वहां के शासक (चांसलर) का राज्याभिषेक पेरिस के वर्साय के महल में किया।

रूस की क्रांति

- रूस की क्रांति दो चरणों में हुयी।
- 1904 – 05 के युद्ध में जब रूस जापान से हार गया तो रूस की अर्थव्यवस्था पूरी तरह प्रभावित हुयी।
- रूस के शासक को जार कहा जाता था।
- जार निरंकुश शासक था। 22 जनवरी, 1905 को मजदूरों का एक संघ राजमहल के सामने अपनी समस्या को लेकर पहुँचा। जिसपर राजा ने गोली चला दी। इस घटना को खुनी रविवार कहा जाता है।
- रूस की क्रांति को वालसेविक क्रांति के नाम से भी जानते हैं।

By : Khan Sir (मानचित्र विशेषज्ञ)

रूस की क्रांति एक साम्यवादी क्रांति थी।

- रूस की क्रान्ति का सबसे बड़ा नायक लेनिन तथा ट्रॉटस्की था। रूस की क्रान्ति को कार्लमार्क्स ने भी समर्थन दिया।
- लेनिन ने चेको सेना का गठन किया जबकि ट्रॉटस्की ने लाल सेना का गठन किया।
- ट्रॉटस्की रूस में अस्थायी प्रगति का समर्थक था।
- लेनिन के नेतृत्व में मजदूरों को एक संघ का निर्माण किया गया। इस संघ को सोवियत संघ नाम दिया गया।
- लेनिन रूस के साही व्यवस्था (जार व्यवस्था) का कट्टर विरोधी था। उसने क्रांति के माध्यम से रूस के जार निकोलस-II के सत्ता का अन्त कर दिया।
- लेनिन की मृत्यु 21 जनवरी, 1924 को हो गई, हालांकि रूस की क्रांति 1917 में ही सफल हो गयी।
- आधुनिक रूस का निर्माता स्टालिन को बोला जाता है।

प्रथम विश्वयुद्ध (First world war) [01 Aug. 1914 – 11 Nov. 1918]

- प्रथम विश्व युद्ध में पूरा विश्व दो भागों में बंट गया था। एक भाग का नाम मित्र राष्ट्र तथा दूसरे का नाम धुरी राष्ट्र था।
- मित्र राष्ट्र के अंतर्गत इंग्लैण्ड, फ्रांस, रूस, जापान तथा अमेरिका था। इसका नेतृत्व अमेरिका कर रहा था।
- धुरी राष्ट्रों के अन्तर्गत जर्मनी, इटली आस्ट्रेलिया तथा हंगरी था। धुरी राष्ट्रों का नेतृत्व Germany कर रहा था।
- मित्रों राष्ट्रों ने इटली को लालच दिया कि वे युद्ध समाप्ति के बाद इटली को कुछ भूमि देंगे किन्तु उन्होंने इटली को कुछ भी नहीं दिया।
- प्रथम विश्व युद्ध का तत्कालिक कारण आस्ट्रीया के राजकुमार फर्डिनेण्ड की हत्या करना था। 28 जून, 1914 को वोत्सिनिया की राजधानी सेराजेवो में कर दिया गया। इस घटना को सेराजेवो हत्याकाण्ड कहा गया।
- इसमें पहली बार कुल 37 देशों ने भाग लिया। पूरा विश्व इसमें भाग नहीं लिया किन्तु इसमें पूरे विश्व की अर्थव्यवस्था प्रभावित हुई। अत: इसे प्रथम विश्व युद्ध कहा जाता है।
- इस युद्ध की शुरुआत 01 अगस्त, 1914 को जर्मनी द्वारा रूस के आक्रमण से हुआ।
- जर्मनी एवं फ्रांस 03 अगस्त को युद्ध कर लिये। जर्मनी ने 8 अगस्त को इंग्लैण्ड पर भी हमला कर दिया।
- 26 अप्रैल, 1915 को इटली इस युद्ध में प्रवेश किया। इस युद्ध में सबसे अन्त में 06 अप्रैल, 1917 को अमेरिका प्रवेश किया क्योंकि अमेरिका के जलयान को जर्मनी की पनडुब्बी यू-बोलस ने डूबो दिया। यह युद्ध पूर्ण रूप से वर्साय की संधि के द्वारा जून, 1919 में समाप्त हुआ।

➲ वर्साय की संधि (June 1919) :–

- यह संधी फ्रांस की पेरिस में स्थित वर्साय के महल में हुआ।
- यह संधी जर्मनी पर जबरदस्ती थोपी गयी थी। इस संधी की शर्तें निम्नलिखित हैं–
  (1) जर्मनी की सेना एक लाख से अधिक नहीं हो सकती।
  (2) जर्मनी कभी भी घातक हथियार नहीं रख सकता है।
  (3) जर्मनी को युद्ध के दौरान मित्र राष्ट्र द्वारा किये गये खर्च का वहन करना पड़ा।
  (4) जर्मनी का राईन लैण्ड रुर घाटी जैसे-कोयला क्षेत्र को फ्रांस को 15 वर्षों के लिये दे दिया गया।
- यह संधी ही द्वितीय विश्व युद्ध जैसे विशाल वृक्ष के बीज के समान कार्य किया।

➲ तुर्की गणराज्य–

- तुर्की को यूरोप का मरीज कहा जाता है। यह एशिया तथा यूरोप दोनों में पड़ता है। यह एक मुस्लिम देश है।
- प्रथम विश्व युद्ध से पहले अंग्रेजों ने यह वादा किया था कि तुर्की का विभाजन नहीं होगा किन्तु प्रथम विश्व युद्ध के बाद सेवर्स के संधी द्वारा तुर्की को मित्र राष्ट्रों ने आपस में बांट लिया। इस संधी का मुस्तफा कमाल पासा ने विरोध किया। इस संधी के खिलाफ भारत में भी खिलाफत आंदोलन चलाया गया।
- अक्टूबर, 1923 को तुर्की को गणराज्य घोषित कर दिया गया। अर्थात् अब तुर्की में राजा न होकर चुनाव के द्वारा राष्ट्र प्रमुख की व्यवस्था की गयी।
- April, 1924 को तुर्की संविधान बनाया गया और मुस्तफा कमाल पासा को राष्ट्रपति बनाया गया।
- मुस्तफा कमाल पासा को आधुनिक तुर्की का राष्ट्रपति (आतातुर्क) कहा जाता है।

इटली में फासीवाद

- इटली में फासीवाद का जनक मुसोलिनी को माना जाता है। मुसोलिनी ने फासीवाद की शुरुआत इटली के मिलान शहर से किया।
- मुसोलिनी के पुत्र का नाम डोमिटो मुसोलिनी था। उसे ड्यूस कहकर बुलाया जाता था।

By : Khan Sir (मानचित्र विशेषज्ञ)

- मुसोलिनी अपने सेना अधिकारियों को डियाज कहकर बुलाता था।
- द्वितीय विश्व युद्ध में मुसोलिनी मित्र राष्ट्रों के विरुद्ध लड़ा था।
- मुसोलिनी का कहना था कि विश्व शांति कायरों का सपना है। वह व्यक्ति जो युद्ध नहीं लड़ा है वह एक बांझ महिला के समान है।
- फासीवादी का अर्थ होता है- एक सुदृढ़ राष्ट्र की स्थापना।
- फासीवादी के मानने वाले लोग जाति के उच्चतर में विश्वास रखते हैं।
- 28 अप्रैल, 1945 को मुसोलिनी को कैद कर फांसी दे दी गयी। इस प्रकार इटली में फासीवाद का अन्त हो गया।

जर्मनी का नाजीवाद

- जर्मनी के नाजीवाद का जनक एडोल्फ हिटलर को माना जाता है।
- इसने नाजी दल की स्थापना 1921 में की।
- 1923 ई. में हिटलर ने म्युनिख शासक का सत्ता पलट दिया किन्तु असफल रहा। जिस कारण हिटलर को बन्दी बना लिया गया।
- जेल में हिटलर ने अपनी आत्मकथा मीन कैम्प लिखी। जिसका अर्थ होता है मेरा संघर्ष (जर्मनी भाषा में)।
- 1982 ई. में जर्मनी का P.M. हिटलर बना और April, 1933 ई. में हिटलर ने जर्मनी के लिए एक सुरक्षा परिषद् का गठन किया और उसका अध्यक्ष बना।
- हिटलर ने एक गुप्तचर व्यवस्था प्रारम्भ किया। जिसे गेस्टापो कहते हैं। हिटलर का नारा था– एक राष्ट्र नेता।
- हिटलर यहूदी धर्म का कट्टर विरोधी था। अत: इसे फ्यूहरर कहते हैं।
- R. हेन्स ने कहा है कि जर्मनी मतलब हिटलर और हिटलर मतलब जर्मनी, जो हिटलर के प्रति वचनबद्ध है वो जर्मनी के प्रति भी वचनबद्ध है। हिटलर ने वर्साय की सारी संधी तोड़ दिया। उसने अपने सेना का शस्त्रीकरण करने लगा। हिटलर के लड़ाकू जहाज को लूफत्वाफ कहते थे। हिटलर की पनडूब्बी को यू-बोटस कहते थे। पनडूब्बीयों में पेट्रोल भरनेवाली छोटी जहाज को Mikcow कहते थे।
- द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान जर्मनी मित्र राष्ट्रों की सेना में चारों ओर से घिर गया और 30 अप्रैल, 1945 को हिटलर अपनी पत्नी इवा ब्राउन के साथ आत्महत्या कर लिया। इस प्रकार जर्मनी से नाजीवाद का अन्त हो गया।

द्वितीय विश्वयुद्ध

[Second world war (1939–45)]

- द्वितीय विश्व युद्ध का मुख्य कारण वर्साय की संधि द्वारा जर्मनी का अपमान था।
- द्वितीय विश्व युद्ध का तत्कालिक कारण जर्मनी का पोलैण्ड पर आक्रमण था।
- इस युद्ध में कुल 61 देशों ने भाग लिया। यह युद्ध 1 सितम्बर, 1939 को प्रारम्भ हुआ और 02 सितम्बर, 1945 तक चला।
- इस युद्ध में 61 देश दो गुटों में बंटे थे-मित्र तथा धुरी राष्ट्र।
- मित्र राष्ट्र में U.S.A., इंग्लैण्ड, फ्रांस तथा रूस थे।
- धुरी राष्ट्रों में जर्मनी, इटली, तथा जापान थे।
- जापान तथा चीन के बीच मन्चूरिया क्षेत्र पर अधिकार के लिए युद्ध हो गया। अत: चीन जापान के विरुद्ध लड़ा। इस प्रकार प्रत्यक्ष रूप से चीन मित्र राष्ट्रों के साथ था।
- इस युद्ध में जापान ने अमेरिका का हवाई द्वीप पर स्थित पर्ल हार्बर नामक नौसैनिक केन्द्र को तबाह/ध्वस्त कर दिया। जिस कारण अमेरिका ने 06 अगस्त, 1945 को जापान के हिरोशिमा पर यूरेनियम से बना Little boy नामक परमाणु बम गिरा दिया तथा 09 अगस्त, 1945 को अमेरिका ने जापान के नागाशाकी पर पोलोनियम से बना Fat man नामक परमाणु बम गिरा दिया।
- इस युद्ध में जर्मनी ने रूस से यह संधि किया था कि वे आपस में युद्ध नहीं करेंगे किन्तु जर्मनी ने इस संधी को तोड़कर रूस पर आक्रमण कर दिया।किन्तु जर्मनी की अधिकतर सेना ठण्ड से मर गयी। दूसरी तरफ जर्मनी की नौसेना डेनमार्क इत्यादि पर हमला करने के दौरान नष्ट हो गयी।
- इंग्लैण्ड की शाही वायु सेना (RAF – Royal Air Force) ने जर्मनी के संधी से अधिक विमानों को मार गिरा दिया।
- जर्मनी ने फ्रांस पर अधिकार कर लिया था।
- इंग्लैण्ड की सेना जर्मनी में घूसने के लिए फ्रांस के नारमण्डी नामक स्थान पर प्रवेश की। जबकि, इंग्लैण्ड की सेना बर्लिन (जर्मनी) पहुँचती उससे पहले ही रूस की सेना बर्लिन पहुँच चुकी थी और हिटलर आत्महत्या कर चुका था।
- जर्मनी की राजधानी बर्लिन में एक दिवार खड़ा कर दी गयी जिसे बर्लिन की दिवार कही गयी। अब जर्मनी दो भागों में बंट गया था।
- पूर्वी जर्मनी पर रूस का अधिकार हो गया जो साम्यवादी था (सबकुछ सरकारी)/Communist/जबकि पश्चिमी जर्मनी पर

By : Khan Sir (मानचित्र विशेषज्ञ)

इंग्लैण्ड तथा U.S.A. का प्रभाव पड़ गया।

- पश्चिमी जर्मनी पूंजीवादी था। (सबकुछ Private)
- 1990 में बर्लिन की दिवार गिरा दी गयी और जर्मनी का दुबारा एकीकरण हो गया।

Note:–द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान जर्मनी के जनरल रोमेल को डेजर्ट फाक्स कहा जाता था।

Note:– द्वितीय विश्व युद्ध की समाप्ति के बाद अमेरिका का राष्ट्रपति रुजवेल्ट था। इंग्लैण्ड के प्रधानमंत्री विस्टन चर्चिल तथा जापान के सम्राट हिरो-हितो थे।

शीत युद्ध [Cold war]

- द्वितीय विश्व युद्ध के समाप्ति के बाद 1945 से 1991 तक जो वाक्‌युद्ध (बात-चित) चला उसे शीत युद्ध कहा जाता है। यह युद्ध अमेरिका तथा रूस के बीच हो रहा था।
- उस समय रूस 15 देशों का एक संघ था जिसे सोवियत संघ कहा जाता था।
- 1991 में सोवियत संघ 15 देशों में टूट गया और शीत युद्ध की अंत हो गयी।

चीन का क्रांति

- यह 1911 में प्रारम्भ हुयी। इस क्रांति के नायक डॉ॰ सनयात सेन थे। इन्होंने चीन के मंचू वंश के शासन को उखाड़ फेंका।
- सनयात सेन ने 1912 में क्योंमिग तांग पार्टी का गठन किया।
- 1927 ई॰ में क्योंमिग तांग पार्टी से साम्यवादी (Communist) विचारधारा के लोग अलग हो गये। जिस कारण 1928 ई॰ में चीन में गृह युद्ध हो गया।
- गृह युद्ध के दौरान Communist का नेतृत्व माओत्से-तुंग कर रहा था।
- माओत्सेतुंग एक कट्टर Communist नेता था। Communisto के दमन के लिए चाई यांग फाइरेक ने साम्यवादी Command Blue Shirt Army का गठन किया किन्तु यह Communisto को हरा नहीं सका और चीन के Reserve Bank का सोना लेकर वह फारमोसा द्विप भाग गया। फारमोसा द्विप का वर्तमान नाम ताइवान है।
- वर्तमान समय में चीन ताइवान को एक देश की मान्यता नहीं देता है।
- 01 अक्टूबर, 1949 को चीन को गणराज्य घोषित कर दिया।
- चीन गणराज्य का पहला अध्यक्ष माओसे-तुंग को बनाया गया।
- माओसे-तुंग ने बोला था कि समाजिक क्रांति बन्दूक की नली से निकलती है।
- माओसे-तुंग का कहना था जहाँ अधिक लोग रहेंगे वहां अधिक तरह के विचार भी आएंगे।
- चीन ने जॉन रे के नेतृत्व में खुले द्वार की नीति अपनाया अर्थात् चीन ने देश को पूरे विश्व के व्यापार के लिए खोल दिया ऐसा करने वाला वह पहला कम्युनिष्ट देश था।

❑❑❑

By : Khan Sir (मानचित्र विशेषज्ञ)